निबंध
विषय – नारी : अतीत और वर्तमान

.....

इस टॉपिक पर लेखन शुरुआत कैसे करें?

Step – 1: सबसे पहले इस टॉपिक के **Keyword** की पहचान करेंगे । इस में मुख्यतः तीन **Keyword** हैं । पहला– "नारी", दूसरा– "नारी का अतीत" और तीसरा– "नारी का वर्तमान" ।

Step – 2: सर्वप्रथम अपनी मौलिक भाषा या मौलिक अभिव्यक्ति द्वारा नारी शब्द को **Define** करेंगे। यहां विशेष ध्यान रखना है कि "नारी" को आप इस प्रकार **Define** करेंगे कि आपके लेख पढ़ने वालों को आपसे जुड़ाव महसूस हो। अर्थात नारी के विषय में आप जो अनुभव करते हैं, उन्हें भी इसकी अनुभूति हो। तब जाकर आपको अच्छे अंक मिल सकेंगे।

Step – 3: 'नारी के अतीत' को मानव सभ्यता के विकास से मध्यकाल के अंत तक की प्रमुख घटनाओं का संदर्भ लेते हुए लिखें। इसके लिए आपको इतिहास विषय और धार्मिक मुद्दों का विशेष ज्ञान होना आवश्यक है। इस भाग में आप लोकोक्ति, मुहावरे, छंद, कविता आदि का सरल भाषा व स्पष्टता के साथ उपयुक्त स्थान पर प्रयोग करें। अपने विचारों को प्रकट करने के क्रम में विचारों को क्रमबद्धता का विशेष रूप से ध्यान रखें।

Step – 4: इसके बाद नारी के वर्तमान पर विशेष चर्चा करें। इस चर्चा में आप इस तथ्य प्रस्तुतीकरण के लिए स्वतंत्र हैं कि आप नारी के वर्तमान को किस रूप में दर्शाना चाहते हैं। अपने प्रत्येक लेखन का तर्क के साथ समायोजन करें। अपने लेखन का झुकाव नारी की यथास्थिति के साथ रखें तथा पुनरावृति से बचें और भाषा की शुद्धता पर ध्यान रखें ।

Step – 5: अंत में उपसंहार लिखे (निबंध में निष्कर्ष लिखने की गुंजाइश नहीं होती)। उपसंहार से तात्पर्य है कि आप अपनी संपूर्ण लेखन का अभिप्राय बताएं और स्पष्टीकरण दें । आपका उपसंहार जितना प्रभावी होगा आपकी रचना भी उतनी ही उत्कृष्ट होगी। समग्रतः कहा जाए तो उपहार में आपकी लेखनी का चिंतन (एक लेखक के रूप में), वैचारिक स्तर, उक्त विषय पर आपकी स्वयं की विचारधारा (किसी नोट्स का कॉपी पेस्ट नहीं) स्पष्ट होनी चाहिए।

प्रस्तावना

(Step – 1:)

प्रकृति की सुन्दरतम रचनाओं में एक नारी को कागज के चंद पन्नों में अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता क्योंकि "नारी स्वयं में ब्रह्मांड है जो अपने भीतर असंख्य प्रतिरोधों को दफन कर

उससे उत्सर्जित धुएं को ऊर्जा में बदल कर 'जीवन और सभ्यता' का पोषण करती है"। जीवन और सभ्यता के 3 आधार होते है– ज्ञान, धर्म और शांति। नारी इन तीनों की "स्वामिनी" होती है । एक वाक्य में कहा जाए तो नारी 'जीवन और सभ्यता का आधार' होती है। तभी तो महाकवि जयशंकर प्रसाद ने भी नारी का महिमामंडन करते हुए लिखा है–

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास–रजत–नग पगतल में।

पीयूष–स्रोत–सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।।

विषय विस्तार

(Step– 2 और Step – 3)

नारी के अतीत और वर्तमान पर उनकी ख्यातियों का नितांत अभाव है क्योंकि इतिहास लेखकों ने पुरुषों को अधिक बढ़ा–चढ़ाकर प्रदर्शित किया है जबकि नारी पर विस्तृत इतिहास लेखन की उपेक्षा की है। यही कारण है कि नारी को इतिहास में वह स्थान मिला हैं जिसकी वह वास्तव में हकदार हैं।

नारी का अतीत 3000 ईसा पूर्व. से पहले प्रागैतिहासिक काल से शुरू होता है जब पाषाण काल और ताम्र पाषाण काल की शुरुआत होती है। आधुनिक काल की भांति प्रागैतिहासिक काल में भी नारी, सभ्यता के विकास में पुरुषों की सहभागी रही है। इस काल में ना तो कोई लिपि थी और ना ही कोई स्थापित कला। लेकिन आधुनिक विज्ञान–तकनीक ने यह स्पष्ट किया है कि पाषाण काल में पत्थर के जो भी छोटे–मोटे औजार बने थे, उसके निर्माण में महिलाएं भी सहयोगी रही होंगी। अर्थात प्रागैतिहासिक काल के पाषाण काल में महिलाएं कुशल 'शिल्पकार' थी। इसके बाद ताम्र पाषाण काल में तांबे और पाषाण के मिश्रित कला सभ्यता का विकास हुआ जिसके अवशेष यह प्रमाणित करते हैं कि उस समय नारी ऊंचे स्तर की 'वैज्ञानिक' और 'इंजीनियर' भी थी।

3000 ईसा पूर्व.– 6000 ईसा पूर्व के आद्य–ऐतिहासिक काल में लिपि और कलाएं तो थी लेकिन इसे आज तक पढा नहीं जा सका है। किंतु प्राप्त कलाओं से नारी के विषय में जितनी भी धारणाएं प्राप्त होती हैं उससे यह साबित होता है कि समूचे आद्य ऐतिहासिक काल का पोषण नारी ने ही किया है। इस काल में दो प्रमुख सभ्यता 'सिंधु सभ्यता' और 'वैदिक सभ्यता' से 'नारी के अतीत अवतरण' की विस्तृत जानकारी मिलती है। सिंधु सभ्यता के उत्खनन से प्राप्त असंख्य देवी मूर्तियां यह दर्शाती है कि यह सभ्यता नारी प्रधान सभ्यता थी जिसमें स्त्री को देवी के रूप में पूजा जाता था। नारी पूरी तरह से स्वतंत्र थी, स्वयं अपनी रूचि के अनुसार श्रृंगार करती थी, तरह–तरह के वस्त्र धारण करती थी, सूत कातती थी , कपास से अपने और पुरुषों के लिए वस्त्र बनाती थी।

पाउलो बियागी के 'सिंधु वाच' मासिक पत्रिका में सिंधु सभ्यता की नारियों की वास्तविक स्थिति के विषय में बहुत अच्छी जानकारी मिलती है। इसमें कहा गया है कि नारियां प्रजनन छवियों का प्रतिनिधित्व करती है। इस समतावादी समाज में नारी को प्राथमिकता दी गई थी। नारी प्रकृति की देवी थी जिसको 'जंगली माई' के रूप में पूजा जाता था। काश आज वर्तमान समय में भी हम नारियों को माई के रूप में देखते हैं और मानते तो

नारी के प्रति घटित असंख्य हिंसात्मक घटनाए न घटती और समाज में सुख– शांति –समृद्धि का प्रवाह होता।

सिंधु काल से आगे की यात्रा में वैदिक काल का समय आता है जिसे 'नारी का स्वर्णिम काल' कहा गया है। इस काल में महिलाओं की स्थिति अनुकरणीय थी। उन्हें समाज में संपत्ति अर्जन करने का अधिकार था। स्त्री– पुरुष में समानता थी। स्त्रियां पुरुषों की भांति उपनयन संस्कार करती थी। नारी को अधिक सम्मान प्राप्त था। किसी प्रकार की नारी कुरीति नहीं थी (जैसे बाल विवाह, भ्रूण हत्या, नारी की खरीद–फरोख्त आदि)। नारी पुरुष संग धार्मिक यज्ञों में शामिल होती थी। यूं कहें कि बगैर नारी की सहभागिता के यज्ञ सफल नहीं होता था। इसका प्रमाण वाल्मीकि रचित 'रामायण' में मिलता है। पुरुषोत्तम राम ने सभी यज्ञ जनकसुता सीता के साथ ही संपन्न किया था (सीता के न होने पर मिट्टी से सीता की प्रतिमा बनाकर राम ने यज्ञ संपन्न किया था)। नारी को वैदिक काल में देवी का दर्जा प्राप्त था। अथर्ववेद में नारी के सम्मान को वर्णित करने वाला एक श्लोक दृष्टव्य है–

अनुव्रतः पितुः पुत्रो माता भवतु सम्मनाः।

जाया परये मतुमतीं वाचं यददु शान्तिवाम॥

इस काल से ही नारी प्रगतिशील और आशावादी समाज निर्माण की जननी रही है। इस काल में नारी का सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त था और व श्रेष्ठ और उच्च भूमिका में थी। वेदों में स्त्रियों की शिक्षा–दीक्षा, शील, गुण, कर्तव्य, अधिकार और सामाजिक भूमिका का जो सुन्दर वर्णन पाया जाता है, वैसा संसार के अन्य किसी धर्मग्रंथ में नहीं है। वे अंतरजातीय विवाह कर सकती थी, अपने लिए योग्य वर का चयन कर सकती कर सकती थी (उदाहरण– सीता स्वयंवर), योग्य वर न मिलने पर वे अविवाहित रह सकती थी (ऐसी नारी को अमाजू कहा जाता था) जिसे समाज का समर्थन प्राप्त था। पुरुषों की तरह नारी भी गुरुकुल में रहकर शिक्षा ग्रहण करती थी और ब्रह्मचय का पालन करती थी (अथर्ववेद, ब्रह्मचर्य सूक्त)। वेद में नारी को घर की सम्राज्ञी कहा गया हैं और देश की शासक, पृथ्वी की सम्राज्ञी तक बनने का अधिकार दिया गया हैं।

उस युग में स्त्रियों की शिक्षा–दीक्षा की सुंदर व्यवस्था थी। अध्ययन–अध्यापन, घर–परिवार तथा सभाओं में और संघर्षमय युद्धों आदि सभी जगह स्त्रियों का समान रुप से योगदान रहता था। नारी को सभी क्षेत्रों व दिशाओं में उन्नति एवं प्रगति करने की स्वतंत्रता थी, इसीलिए उस काल में नारी की प्रतिभा तथा ज्ञान अपूर्व और अद्‌भुत था। उस काल में नारी के अंदर विचारशक्ति व आत्मबल के साथ उसके व्यवहार में शालीनता, विनम्रता थी तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व भी था। उस युग में स्त्रियाँ वैदिक और दर्शन आदि की शिक्षा के अतिरिक्त गणित, वैद्यक, संगीत, नृत्य और शिल्प आदि का भी अध्ययन करती थीं। क्षत्रिय स्त्रियाँ धनुर्वेद अथात् युद्धविद्या की भी शिक्षा ग्रहण करती थीं तथा युद्ध में भाग भी लेती थीं। उच्च शिक्षा प्राप्त स्त्रियों में से कुछ आजन्म ब्रह्मचारिणी रहकर आध्यात्मिक उन्नति में लगी रहती थीं, इन्हें ब्रह्मवादिनी कहा जाता था। अन्य स्त्रियाँ गृहस्थ जीवन का संचालन करती थीं, किन्तु गृहस्थाश्रम मे प्रवेश लेने से पूर्व वे ब्रह्मचारिणी रहकर अध्ययन कर चुकी

होती थीं। ब्रह्मवादिनी स्त्रियाँ वेदाध्ययन करतीं, काव्य रचना करतीं तथा त्याग, तपस्या के द्वारा ऋषिभाव प्राप्त करके मंत्रों का साक्षात्कार भी कर लेती थीं। ऋग्वेद के अनेक सूक्त महिलाओं ने साक्षात्कृत किए हैं जिनमें ममता, रामाशा, विश्ववारा, घोषा, सूर्या, वक्रा, मैत्रेयी, गार्गी आदि का नाम उल्लेखनीय है। ममता ने ऋग्वेद के प्रथम मंडल के 10 वें सूक्त , रोमाशा ने ऋग्वेद के प्रथम मंडल के 126 वें सूक्त, विश्ववारा ने ऋग्वेद के पांचवें मंडल के 28 वें सूक्त, घोषा ने ऋग्वेद के दशवें मंडल के 39वें और 41 वें सूक्त की रचना की है। साथ ही घोषा ने ब्रह्मचारिणी कन्याओं के लिए एक आदेश पुस्ती (पुस्तिका) का भी सृजन किया है । सूर्या ने ऋग्वेद में वैदिक विधि से संपन्न होने वाले विवाह पदों को लिखा है। ऋग्वेद में संकलित देवी सूक्त के 8 मन्त्रों का लेखन महान विदुषी वक्रा द्वारा किया गया है। याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी ने अनेक दार्शनिक विचारों की रचना की है। गार्गी ने अपनी विद्वता से याज्ञवल्क्य को वार्तालाप में पराजित किया और बाद में विदेह नरेश जनक की नवरत्न बनी।

नारी की इतनी अधिक उन्नति भला पुरुष समूह कैसे बर्दाश्त करता ..? इतने संपन्न नारी समाज संरचना का अवसान 'उत्तर वैदिक काल' में आरंभ हुआ। नारी को शिक्षा देने से रोक दिया गया। बहुपतित्व और बहुपत्न्नी प्रथा जैसे नवीन अवधारणा का जन्म हुआ जिसने नारी, समाज में उपभोग की वस्तु समझी जाने लगी। समाज में वेश्यावृत्ति, देवदासी प्रथा, भ्रूण हत्या, पर्दा प्रथा, नारियों का क्रय–विक्रय तेजी से फैलने लगा। पैतृक संपत्ति में नारी के हिस्से को समाप्त कर दिया गया। नारी के लिए सभी प्रकार से आर्थिक गतिविधियों पर प्रतिबंध का आरोपण किया गया। संक्षेप में कहें तो इस युग में नारी को गवार बनाने के लिए वे सभी जतन किए गए जितना समकालीन प्रतिस्पर्धी समाज कर सकता था। 'रामचरित मानस' के सुन्दरकाण्ड की एक चौपाई भी नारी की इस दुर्दशा का समर्थन करती है –

'ढोल, गंवार, सूद्र, पशु, नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी'

(Step – 4)

वैदिक काल और उत्तर वैदिक काल में नारी के अवतरण का दो स्वरूप मिलता है। वैदिक काल में नारी की स्थिति बहुत अच्छी थी और उत्तर वैदिक काल में नारी की स्थिति बहुत खराब होती गई। परंतु मध्यकाल के शुरूआत और इस्लाम धर्म के उदय के साथ ही नारी के अवतरण में विरोधाभास शुरू हुआ।

इस्लाम के विधि किताब 'कुरान' में नारी को प्रकृति की सबसे कोमल संरचना बताया गया है जिसकी हिफाजत करना पुरुषों का दायित्व है। कुरान में यह भी कहा गया है कि नारी और पुरुष में किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं है और दोनों को समान अधिकार प्राप्त है। लेकिन कुरान मजीद–पारा–5–सुरा–निका 4 आयत –24 में कहा गया है–

"वल्मुहसनातु मिनन्निसा–इ दृइल्ला दृमा"।

अर्थात इस्लाम में गैर स्त्री को देखना गुनाह है लेकिन कैद किए गए स्त्री के साथ कुछ भी किया जा सकता है। कुछ भी मतलब कुछ भी..। 4–अन–निशा आयत 3 में पुरुष को महिला से श्रेष्ठ बताया गया है और विशेष परिस्थिति में उन्हें चार शादियां करने की इजाजत दी गई है। यह स्थिति नारी–पुरुष समानता अधिकार को सीमित करता है। इस्लाम धर्म में

प्रचलित 'हलाला प्रथा' नारी के भावनात्मक छरण और द्विखंदी विभाजन का सूचक है जो नारी के अतीत में विरोधाभास उत्पन्न करता है। यद्यपि वर्तमान समय में आधुनिक शिक्षा प्रसार और न्यायपालिका हस्तक्षेप ने इस विरोधाभास को सीमित किया है तथापि कुछ रूढ़िवादी मुस्लिम परिवारों में यह प्रथा आज भी चलित है जो नारी की स्थिति को बदतर करने के लिए जिम्मेदार हैं।

सल्तनत और मुगल काल में भी नारी का वर्तमान 'द्विखंदी' ही रहा। सल्तनत काल में नारी ने स्वयं को एक कुशल प्रशासक, सुल्तान और योद्धा के रूप में स्थापित किया। इल्तुतमिश की पत्नी शाह तुर्कान सल्तनत काल की प्रथम कुशल महिला थी जिसने सल्तनत कालीन प्रशासन में प्रत्यक्ष रूप से भाग लिया। रजिया सुल्तान ने भारत के प्रथम मुस्लिम नारो शासिका के रूप में अपने दक्ष प्रशाकीय कार्यों से यह साबित किया कि नारी भी प्रशासन के सबसे ऊंचे क्रम का सफलतापूर्वक प्रतिनिधित्व कर सकती है और आधुनिक समय में यही बात 'इंदिरा गांधी' और 'प्रतिभा देवी सिंह पाटिल' ने भी सिद्ध किया।

मुगल काल में नारी का अवतरण दो खेमों में विभाजित हुआ। पहले खेमे में उच्च वर्ग (अमीर और बादशाह) की महिलाएं थी जिन्हें समाज में ऊंचा और सम्मानित स्थान प्राप्त था तो दूसरे खेमे में जनसाधारण नारिया थी जो बादशाह और अमीर वर्ग के हरम में उनके लिए मनोरंजन का साधन थी। जब तक हरम में नारी की जवानी होती अमीर और बादशाह उनका भरपूर शोषण करते और उम्र ढलने पर नारियों को अपने सैनिकों में बांट देते। फिर और उम्र ढलने पर नारी को वेश्यालय में धकेल दिया जाता। मुगल काल में स्वतंत्र वेश्यावृत्ति का घिनौना रूप दिखता है जिस कारण से आम परिवार में कन्या का जन्म होना अशुभ माना जाने लगा। नतीजा यह हुआ कि बड़े पैमाने पर कन्या भ्रूण हत्या और कन्या हत्या किया गया। अपने सम्मान के रक्षार्थ नारियों ने सती और जौहर होना स्वीकार किया। यह परंपरा 19वीं शताब्दी तक चलता रहा जिसे आधुनिक समाज सुधारक राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, जगन्नाथ शंकर सेठ, भाऊ दाजी, डी.के. कर्वे, वीरेशलिंगम पंतुलु के अथक प्रयासों से सरकार द्वारा निषिद्ध किया गया।

मुगल काल में कुछ नारियों ने शासकीय कौशल का खूब परिचय दिया अकबर के बाल्यकाल में उनकी दायमा हमने कुशलतापूर्वक शासन का नेतृत्व किया अलवर दिखाएं की बेटी साहिब जी ने अपनी कूटनीतिक दूरदर्शिता का परिचय देते हुए काबुल में गवर्नर का पद बखूबी संभाला। मध्य भारत में रानी दुर्गावती ने 70,000 गांवों पर तथा ताराबाई ने मराठा राज्य पर शासन किया। जहांगीर के शासनकाल में नूरजहां का प्रशासन पर खासा प्रभाव था। यानी अतीत काल से मध्यकाल तक नारियों ने यह साबित किया कि वे किसी भी स्थिति में प्रतिस्पर्धी समाज से कम नहीं है। अगर प्रतिस्पर्धी समाज इन्हें रोकने की साजिश ना करता और उन्हें आजादी देता तो इतिहास के पन्ने नारी के अनेक कथाओं से भरे होते हैं।

वर्तमान नारी के अवतरण को ब्रिटिश शासन काल में देखा जा सकता है। इस समय नारियों का लिंग आधारित शोषण किया गया, उन्हें शिक्षा से वंचित किया गया, अंधविश्वास का सहारा लेकर नारियों की हत्याएं की गई, जातिगत हत्याएं भी की गई, नारियां देवदासी बनाई गई। प्रमुख समाज सुधार आंदोलनों और सरकारी कानूनों ने नारी को इस दयनीय स्थिति से निकाल कर उन्हें समानता का अधिकार और सम्मान दिलाया। इसी समय कई नारियों ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी कार्यकुशलता का प्रमाण दिया। जिनमें प्रमुख उल्लेखनीय

नाम है – सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी, सरला देवी चौधुरानी, रमाबाई रानाडे, पंडिता रमाबाई सरस्वती, मेहरीबाई टाटा, कार्नेलिया सोराबजी, ताराबाई प्रेमचंद, शफी तैय्यबजी सुचारू देवी, कमला देवी चट्टोपाध्याय, सावित्रीबाई फुले, उषा मेहता, मैडम भीकाजी रुस्तम कामा, प्रभावती सरस्वती देवी....। इसके अलावे भी असंख्य नारियों के नाम बताने शेष है जिनसे नवीन नारी युग की शुरुआत होती है और जो द्विखंडी व्यक्तित्व में विभाजित होते हुए भी पुरुषों के साथ समान सरोकारों को स्वीकार कर राष्ट्र निर्माण कर रही है।

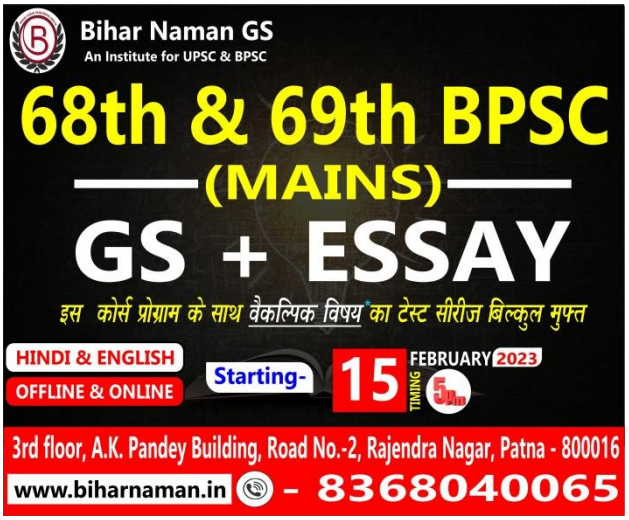

उपसंहार

(Step – 5)

वर्तमान नारी विलासिनी और अनुचरी के स्थान पर देवी, मां, प्रेयसी और सहचरी के रूप में अर्थव्यवस्था, रक्षा न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य, खेल, प्रशासन, राजनीति, अंतरिक्ष, व्यवसाय, कूटनीति, अनुसंधान के क्षेत्र में नारी शक्ति की दशा और दिशा परिवर्तित करते हुए नए युग की नारी के रूप में अनुकरणीय हो रही है। लेकिन नारी के विरुद्ध बढ़ते यौन अपराध घरेलू

हिंसा, कन्या भ्रूण हत्याओं ने वर्तमान नारी के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। जब बात नारी की हो तो बात आधी आबादी की होती है। कुछ द्वीपीय देशों को छोड़ दे तो नारी की वर्तमान स्थिति भारत में अच्छी नहीं है। विकास तब होगा जब भागीदारी 50 : 50 की हो। लेकिन भारत में ऐसा आंकडा किसी भी क्षेत्र में नहीं है। विश्व बैंक द्वारा जारी रिपोर्ट भारत में नारी की स्थिति को दर्शाता है। देश के सर्वोच्च कानून निर्माण संस्था संसद के ऊपरी सदन राज्यसभा में 13% (245 में मात्र 32 महिला सांसद), निचले सदन लोकसभा में 15% (543 में मात्र 78 महिला सांसद) है। बिहार विधायिका के मामले में यह आंकड़ा तो और भी कम है बिहार सरकार में भी सरकार के विभिन्न प्रारूपों तथा विभागों में नारी की स्थिति तथा नारी का प्रतिनिधित्व औसतन 11 से 13% है जिस कारण से हम यह भी नहों कह सकते कि बिहार में नारी की वर्तमान स्थिति बहुत अच्छी है।

वर्तमान नारी विकास के लिए शिक्षा प्रसार, राजनीतिक चेतना, सामाजिक जागरूकता, नारी उत्थान कार्यक्रमों का सही से अनुपालन, उचित सरकारी कानूनों का निमाण किया जाना बहुत आवश्यक है। नारी के प्रति पुरुष मानसिकता में बदलाव भी जरूरी है। तभी तो अवलोकन के आधार पर हम ऊंचे स्वर में कह सकेंगे कि नारी केवल शब्द नहीं वरन नारी प्रतीक है– श्रद्धा की, त्याग की, विश्वास की, उज्जवल आचरण की, संस्कृता की, सेवा की, बलिदान की, प्रेम की, दया की, मित्र की, शुभचिंतक की, नैतिकता की, चारित्रिक सौष्ठव की, निष्ठा की, स्वाभिमान की, अभिमान की और समृद्धि की।

मूल लेखन
द्वारा – संतोष कश्यप

Patna Center
3rd floor, A.K. Pandey Building, Road No.-2, Rajendra Nagar, Patna - 800016
- 8368040065 www.biharnaman.in biharnaman@gmail.com